

यदि इंसान गहराई से सोचे तो पाएगा कि धार्मिक गिरोहों और स्वयं धर्मों के बीच सभी समस्याओं एवं मतभेदों का कारण वह मध्यस्थ हैं, जिन्हें इंसान उनके एवं उनके सृष्टिकर्ता के बीच बना लेता है। उदाहरण के तौर पर कैथोलिक एवं प्रोटेस्टेंट आदि संप्रदाय, हिंदू संप्रदाय से निर्माता के साथ संवाद करने के तरीके पर भिन्न हैं, स्वयं निर्माता के अस्तित्व की अवधारणा पर नहीं। यदि वे सभी सीधे ईश्वर की इबादत करें, तो एक हो जाएंगे।

الدعوة الإلكترونية
 @EDCkwt

इब्राहीम -उनपर शांति हो- के संदेश की पुष्टि के लिए भेजा, तो इब्राहीम -अलैहिस्सलाम- के अनुयायियों पर नए नबी को स्वीकार करना और यह गवाही देना ज़रूरी हो गया कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है तथा मूसा व इब्राहीम अल्लाह के रसूल हैं। उस समय जो बछड़े की पूजा करता था, वह ग़लत रास्ते पर था।

जब ईसा -अलैहिस्सलाम- मूसा -अलैहिस्सलाम- के संदेश की पुष्टि के लिए आए, तो मूसा के अनुयायियों पर ईसा को सच मानना, उनकी पैरवी करना और यह गवाही देना ज़रूरी हो गया कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई माबूद नहीं है और ईसा, मूसा और इब्राहीम अल्लाह के रसूल हैं। अब जिसने तीन माबूदों की आस्था रखी और ईसा तथा उनकी माँ सत्यवादी मरयम की इबादत की, वह ग़लती पर था।

इसी तरह जब मुहम्मद -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- अपने पूर्व के नबियों के पैग़ाम की पुष्टि के लिए आए, तो ईसा और मूसा -उन दोनों पर शांति हो- के अनुयायियों पर नए नबी को स्वीकार करना और यह गवाही देना अनिवार्य हो गया कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है और मुहम्मद, ईसा, मूसा और इब्राहीम अल्लाह के रसूल हैं। अब जो मुहम्मद की इबादत करे या उनसे मदद माँगे, वह असत्य एवं ग़लत पर है।

इस्लाम उन आकाशीय धर्मों की पुष्टि करता है, जो उससे पहले उसके ज़माने तक आते रहे। इस्लाम यह मानता है कि रसूलगण जो धर्म लाए वो अपने-अपने युग के लिए उपयुक्त थे। परन्तु आवश्यकता के बदलने के साथ-साथ नए धर्म की बारी आती है, जो मूल में तो पूर्व के धर्म के साथ सहमत होता है, परन्तु ज़रूरतों के अनुसार आदेशों एवं निर्देशों में भिन्न होता है। वह अपने पूर्व के धर्मों के एकेश्वरवाद की पुष्टि करता है और वह संवाद का रास्ता अपनाकर सृष्टिकर्ता के संदेश के स्रोत के एक होने की हकीकत को पूरी तरह स्वीकार करने वाला होगा।

धर्मों के बीच संवाद इसी मूल अवधारणा पर आधारित होना चाहिए, ताकि एक सच्चे धर्म की अवधारणा और अन्य धर्मों के बातिल होने पर जोर दिया जा सके।

संवाद के कुछ अस्तित्वगत और धार्मिक उसूल हैं। एक व्यक्ति के लिए यह ज़रूरी है कि वह उनका सम्मान करे और दूसरे के साथ संवाद करने के लिए उन ही को आधार बनाए। क्योंकि इस संवाद का उद्देश्य कट्टरता और मनमानी से छुटकारा पाना है, जो पक्षपातपूर्ण अंधी संबद्धता को मिटाने का नाम है, जो मनुष्य को शुद्ध एकेश्वरवाद की वास्तविकता से दूर रखती है और लड़ाई तथा विनाश की ओर ले जाती है, जैसा कि इस समय हमारी स्थिति है।

දුස්මාමය පිළිබඳ ප්රචණ්ඩ හා පිළිතුරු

සබැඳිය: <https://www.2030.org/2020/02/02/2020/35/>

الرجاء عدم النسخ: <http://www.2030.gov.kw/2026/05/2026/35/>

الرجاء عدم النسخ 1922 2026 05:23:07